L.N.M. College of Higher Education.
B.Ed. (2019-21) - First year / BCC-4 (Language Across the Curriculum)
Taught by - (Rakesh Sir).

(UNIT-3 / Ch-4)

Role of the Teacher in Language Teaching
(भाषा शिक्षण में शिक्षक की भूमिका)

(Long Type (Ques-Answer → दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर)

Question → Write a notes on Role of Teacher in Language Teaching. (भाषा शिक्षण में एक शिक्षक की भूमिका पर निबंध लिखिए।)

Answer → कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका पर ही सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था निर्भर करती है। परन्तु आज खेद की बात यह है कि शिक्षक की भूमिका उतनी प्रभावशाली नहीं रह गयी है जितना प्राचीन काल में थी। शिक्षक अपने संपूर्ण दायित्वों का निर्वाह उतनी कुशलता से नहीं कर पाते हैं, जितनी उनसे अपेक्षा रखी जाती है। इसका कारण यह है कि आज शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पित शिक्षक का अभाव है। आज शिक्षकों ने बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ तो हासिल कर ली हैं, परन्तु उनमें वह ज्ञान, अनुभव तथा ज्ञान के प्रति समर्पित भाव नहीं है जो उनसे अपेक्षा रखी जाती है। अनियमित नौकरी, अल्प वेतन के कारण योग्य शिक्षक भी शिक्षा के प्रति तथा अपना दायित्वों के प्रति उदासीन, असंतुष्ट तथा प्रमादी बन जाते हैं। शिक्षा के प्रति समर्पण में शिक्षकों का प्रशासन भी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। नैतिक बल, शिष्ट व्यवहार, शुद्ध आचरण, सच्चरित्रता, छात्रों के प्रति सहानुभूति एवं प्रेम आदि गुण शिक्षकों में होना निश्चित अपेक्षित है। आदान-प्रदान द्वारा शिक्षा का कार्य चलता रहता है। शिक्षा में छात्र तथा छात्र दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है।

शिक्षक की भूमिका :→ शिक्षा जगत में शिक्षक की भूमिका →

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित प्रकार से समझी जा सकती है →

(1) पाठ्य-विषय की पूर्ण तैयारी करना → शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका उसके शिक्षण में होती है। जिस भी पाठ्य-सामग्री वह पढ़ाने जा रहा है उस पाठ्य-विषय का उसे भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। पाठ्य-विषय को पढ़कर उसके छोटे-छोटे नोट्स के रूप में पॉइण्ट (मुख्य बिंदु) तैयार करके ही कक्षा-कक्ष में प्रवेश करना चाहिए। पाठ्य-विषय की भली प्रकार तैयारी के अभाव में वह कक्षा-कक्ष में प्रभावी शिक्षण प्रदान करने में असफल रहेगा।

(2) पाठ को सुचारु रूप से पढ़ाना → शिक्षक को कक्षा-कक्ष में पढ़ाये जाने वाले पाठ को भली प्रकार समझकर उसे सुचारु रूप से पढ़ाना चाहिए। शिक्षक का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य छात्रों को ज्ञान प्रदान करना है। अतः ज्ञान प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री सार रूप में आत्मसात् हो तभी वह उसका स्थानान्तरण अपने छात्रों को करा पायेगा। अतः शिक्षक का यह दायित्व है कि वह पाठ को सुचारु रूप से पढ़ा सके। इस प्रकार की क्षमता उनमें होनी चाहिए और कक्षा-कक्ष में यही उसकी भूमिका है जिसे उसे निर्वाह करना चाहिए।

(3) छात्रों में शिक्षा के प्रति लालसा उत्पन्न करना → शिक्षक की एक महत्वपूर्ण भूमिका छात्रों में शिक्षा के प्रति लालसा उत्पन्न करना, उनका उत्साह बढ़ाना तथा उन्हें प्रेरित करना भी है। छात्र तभी शिक्षा ग्रहण करने के लिए अभिप्रेरित होते हैं, जब उनके मन में शिक्षा के प्रति रुझान तथा लालसा होती है। ज्ञान के प्रति प्रेम उत्पन्न करके ही शिक्षक छात्रों को ज्ञानार्जन के लिए अभिप्रेरित कर सकता है। शिक्षा के प्रति रुझान उत्पन्न करने के लिए शिक्षा की उपयोगिता छात्रों को बताना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षक को समस्याओं से भी अवगत होना चाहिए तथा किस शिक्षा से उन्हें क्या फायदा हो सकता है, इसके बारे में भी बताना चाहिए। छात्रों का उत्साह बढ़ाने

Scanned with CamScanner

क्षेत्रों का ज्ञान नहीं होना चाहिए बल्कि उसके लिए उससे सम्बन्धित अन्य विषयों का ज्ञान भी अनिवार्य है। विज्ञान विषय के अनेक विषय, जैसे - इतिहास, गणित, भूगोल, संगीत भाषा आदि सम्बन्धित हैं। यदि विज्ञान के शिक्षक को इन सम्बन्धित विषयों का उचित ज्ञान नहीं है तो वह कदापि एक अच्छा शिक्षक नहीं बन सकता है।

(6) व्यवसाय में दक्षता अर्जित करना— एक अच्छे शिक्षक को अपने व्यवहार में दक्षता अर्जित करना चाहिए। शिक्षक को शिक्षण विधि में, पाठ सूत्र निर्माण में उसे निपुण होना चाहिए। विषय का ज्ञान होना एक अलग बात है तथा ज्ञान को सही रूप में छात्रों तक पहुँचाना दूसरी बात है। यदि एक शिक्षक अपने विषय में दक्षता अर्जित कर लेता है, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह अपने व्यवसाय में भी दक्ष है। उसे अपने व्यवसाय में दक्ष होने के लिए उसे अपने विषय का विद्वान भी होना चाहिए। शिक्षक को कक्षा-कक्ष में पढ़ाने से पूर्व अपने व्यवसाय में दक्ष होना चाहिए।

(7) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान अर्जित करना → शिक्षक का यह दायित्व है कि वह बालकों के शारीरिक, मानसिक स्तर को देखकर उन्हें शिक्षा दे। शिक्षक को चाहिए कि वह विभिन्न बालकों के स्वभाव, आवश्यकता, बुद्धि स्तर, रुचि तथा अभिरुचि को भली-भाँति समझे और उनको उनके उपयुक्त विषय का ज्ञान दे। इसके मनोवैज्ञानिक ज्ञान का होना आवश्यक है। यदि छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नता पर ध्यान न दिया जाए तो हमारे शिक्षण कार्य का महत्त्व समाप्त हो जाएगा।

(8) बालकों के साथ सहानुभूति एवं धैर्य से पेश आना → एक अच्छे शिक्षक को सहानुभूति के साथ-साथ धैर्य एवं सहनशीलता भी व्यक्त करनी चाहिए। उसे शीघ्र बात-बात पर क्रोध प्रकट नहीं करना चाहिए। जो शिक्षक शीघ्रता से धैर्यहीन होकर बात-बात पर क्रोधित होकर छात्रों को दंड देते हैं, वे कभी भी बालकों उचित शिक्षा प्रदान नहीं करते हैं।

(9) सह-पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों में रुचि लेना → कुछ अध्यापक सह-पाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों में बिल्कुल रुचि नहीं रखते हैं और कुछ बहुत अधिक रखते हैं। आज की शिक्षाशास्त्रीय प्रगति, शिक्षा सर्वथा परिवर्तित युग पाठ्यक्रम के पाठ्येतर प्रवृत्तियों के अनुसार होना चाहिए। अतः सफल शिक्षक वही माना जाता है जो इन क्रियाओं का भली-भाँति आयोजन कर सकते हैं और बालकों [illegible] की दृष्टि से एक सही [illegible] का भी [illegible]

के लिए किस प्रकार की शिक्षा उन्हें कैरियर में कितना लाभ पहुंचा सकती है, इस बात से भी अवगत करना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा के विषय में भी वार्ता की जा सकती है और इस प्रकार उत्साह बढ़ाकर उन्हें अभिप्रेरित किया जा सकता है।

(4) दृश्य - श्रव्य साधनों का सदुपयोग करना → शिक्षक को दृश्य - श्रव्य साधनों का सदुपयोग करना भी आना चाहिए। शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग पर शिक्षक को बल देना चाहिए। सहायक सामग्री के प्रयोग से पाठ को प्रभावशाली तथा रोचक बनाया जा सकता है। दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोग से बालकों की इन्द्रियाँ बहुत जागरूक होती हैं। दृश्य अर्थात् देखने से संबंधित और श्रव्य अर्थात् सुनने से संबंधित कार्य बालक प्रारम्भ करता है। चलचित्र, संग्रहालय, अजायबघर आदि इसी शिक्षा व्यवस्था में आते हैं। यहाँ बालक देख-देखकर उस वस्तु या जीव के बारे में जानते हैं। शिक्षक कठिन शब्दों या स्थलों का स्पष्टीकरण करने के लिए मौखिक उदाहरणों की सहायता ले सकते हैं। मौखिक रूप से शब्द-चित्र प्रस्तुत करने वाले साधनों को मौखिक उदाहरण कहा जाता है। जिन सामग्रियों के प्रयोग से छात्र सुनकर मन में शब्द-चित्र का निर्माण करते हैं और दुरूह स्थल को समझते हैं, उन उपकरणों को श्रव्य उपकरण कहा जाता है। कुछ साधन दृश्य होते हैं। इन साधनों को देखकर, शब्द, अर्थ या भाव को समझा जाता है। श्रव्य उपकरणों में श्रवणेन्द्रिय का प्रयोग है तो दृश्य उपकरणों को साक्षात् नेत्रों से देखा जाता है। ऐसे उपकरण बहुत कम होते हैं जो दृश्य-श्रव्य दोनों होते हैं।

(5) अपने विषय का पूर्ण ज्ञान अर्जित करना → शिक्षक को अपने विषय के समस्त क्षेत्रों तथा उससे संबंधित क्षेत्रों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। प्रत्येक विषय के भिन्न-भिन्न क्षेत्र एक दूसरे से संबंधित होते हैं। यदि शिक्षक किसी विषय के एक क्षेत्र को पढ़ता है तो वह अपना कार्य तब तक दक्षता के साथ नहीं कर सकता, जब तक कि उसे उस विषय के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान न हो। उदाहरण के लिए गणित विषय को लेते हैं। यदि शिक्षक को अंकगणित का सही ज्ञान नहीं है तो वह रेखागणित को यथोचित रूप से नहीं पढ़ा सकता है। शिक्षक को अपने विषय के विभिन्न